भिलोडा

प्रातः क्लास 7-6-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। यह है छोटा सा गुलशन। ह्यूमन गुलशन। बगीचे में तुम जाओ तो उसमें पुराने झाड़ भी होते हैं किसम2 के। कहां मुखड़ियां भी होता है, कहां अधखिलीहुई मुखड़ियां होती है। यह भी बगीचा है ना। यहां बिल्कुल मुखड़े नहीं हैं। कोई2 मुखड़े भी लाते हैं गोद में बिठा कर। अभी यह तो बच्चे जानते हैं यहां आये हैं कांटों से फूल बनने लिए। श्रीमतसे हम कांटे से फूल बन रहे हैं। कांटा जंगल के होते हैं। फूल बगीचे बस्ती में होते हैं। बगीचा है स्वर्ग। जंगल है नर्क। बाप भी समझाते हैं कि यह है पतित कांटों का जंगल। वह है फूलों का बगीचा। फूलों का बगीचा था। वही फिर अभी कांटों का जंगल बना है। देह-अभिमान है सब से बड़ा कांटा। इसके बाद फिर सभी विकार आते हैं। वहां तो तुम देही-अभिमानी रहते हो। आत्मा में ज्ञान रहता है अभी हमारी आयु पूरी हुई है अभी यहपुराना शरीर छोड़ हम दूसरा जाकर लेंगे। सा० होता है हम माता के गर्भ महल में जाकर विराजमान होंगे। फिर मुखड़े बन कर फिर मुखड़े से फूल बनेंगे। यह आत्मा को ज्ञान है। यह सृष्टि चक्र कैसे फिरता है यह ज्ञान नहीं है। सिर्फ यह ज्ञान है कि यह शरीर पुराना है। उनको अभी बदलना है। अन्दर में खुशी रहती है। कलियुगी दुनिया के कोई भी रसम-रिवाज़ वहां होते नहीं। यहां होती है लोक-लाज कुल की मर्यादा... फर्क है ना। वहां के मर्यादा को सत्य मर्यादा कहा जाता है। यहां तो है असत्य मर्यादा। श्रेष्ठ तो है ना। बाप आते ही हैं जब कि श्रेष्ठ हैं। देवी सम्प्रदाय की जब स्थापना होती है तब ही विनाश होता है। तो जब आसुरी सम्प्रदाय है। उनमें ही आकर देवी सम्प्रदाय की स्थापना करते हैं। देवी गुणवाली सम्प्रदाय स्थापन हो रही है। यह भी समझाया है योगबल से तुम्हारे जन्म-जन्मान्तर के पाप नष्ट होनी हैं। इस जन्म में जो पाप किये हैं वह भी बतानी पड़ती है। इसमें भी खास है विकार की। नंगन होने की बात। याद में है कब। बाप है सर्व-शक्तिवान। तो जो सर्व का बाप है उनके साथ योग लगाने से तुम जानते हो वह हम होते हैं। यह (ल०ब्रा०) सर्वशक्तिवान है ना। सारी सृष्टि पर इनका राज्य है। वह है ही नई दुनिया। हर चीज़ नई। अभी तो जमीन ही कलराठी हो गई है। अभी तुम बच्चे नई दुनिया के मालिक बनते हो। तो इतनी खुशी रहनी चाहिए। जैसा स्टुडेन्ट वैसे खुशी भी जाग्ती होगी। तुम्हारी यह है ऊंच ते ऊंच युनिवर्सिटी। ऊंच ते ऊंच पढ़ाने वाला है। बच्चे पढ़ते भी हैं ऊंच ते ऊंच बनने लिए। तुम कितना ऊंच थे। एकदम नीचे फिर एकदम ऊंच बनते हो। बाप खुद कहते हैं तुम स्वर्ग के लायक थोड़े ही हो। अपवित्र वहां जा नहीं सकते। नीच हैं तब तो ऊंच देवताओं की महिमा करते हैं उनके आगे सिर झुकाते हैं। मंदिरों में जाकर उनके आगे अपनी नीचता और उनकी ऊंचता का वर्णन करते हैं। फिर कहते हैं हम बनें तो हम भी ऊंच बनें। उन्हों के आगे माथा टेकते हैं। है तो वह भी मनुष्य। परन्तु उन में देवी गुण है। इसलिए उनको देवता कहा जाता है। यहां आसुरी गुण होने कारण असुर कहा जाता है। मनुष्य ही देवी गुणों वाला बनते हैं फिर आसुरी गुणों वाला भी बनते हैं। मंदिरों में जाते हैं उन्हों की पूजा करते हैं कि हम भी इन जैसे बनें। यह कोई को पता नहीं है कि इन्हों को ऐसा किसने बनाया। तुम पहले नहीं जानते थे। अभी बाप ने बताया है। तुम बच्चों की बुधि में सारा ड्रामा बैठा हुआ है। कैसे इस देवी झाड़ का सेपलिंग लगता है। बाप आते भी हैं संगम पर। यह पतित दुनिया है इसलिए बाप को बुलाते हैं। हमको आकर पतित से पावन बनाओ। इस दुनिया में सभी पतित ही पतित है। अभी तुम पावन होने लिए पुरुषार्थ करते हो। बाकी तो सभी हिसाब किताब चुकुत कर चले जावेंगे शान्तिधाम। मन्मनाभव का मंत्र है मुख्य। जो तुमको बाप ही देते हैं। गुरु लोग तो ढेर के ढेर हैं। कितने मंत्र देते हैं। बाप का है ही एक मंत्र। बाप ने भारत में ही आकर मंत्र दिया था। जिससे तुम देवी देवता बने थे। भगवानुवाच है ना। वह लोग भल श्लोक आद कहते हैं परन्तु अर्थ कुछ भी नहीं जानते। तुम अर्थ समझा सकते हो। कुम्भ के मेले में जाते हैं वहां भी तुम सभी को समझा सकते हो यह है पतित दुनिया। नर्क। सतयुग पावन दुनिया थी। जिसको ही स्वर्ग कहा जाता है। पतित दुनिया में पावन कोई हो न सके। साधु सन्यासी भी गंगा स्नान

कर पावन होने लिए आते हैं क्योंकिवह समझते हैं शरीर को ही पावन बनाना है। आत्मा तो सदैव पावन है ही। आत्मा सोपरमात्मा कह देते हैं। तुम लिखभी सकते हो। आत्मा हीपतित और पावन बनती है। आत्मा पवित्र होगी ज्ञान स्नान करने न कि पानी की स्नान से। पानीका स्नान तो रोज करते रहते हैं। जो भी नदियां हैं उनमें रोज स्नान करते हैं, पानीभीवहीपीते हैं। अभी पानी से तो सब कुछ किया जाता है। इलाहाबाद में जो रहते हैं वा कलकत्ता में जहां ब्रह्मपुत्रा नदी जाये मिलती है। सारा किचड़ा जाकरसागर में पड़ता है। फिर सागर से कैसे बादल पानी खेंचते हैं। एकदम कंचन पानी हो जाता है। ब्रह्मपुत्रा नहीं बहुत मशहुर है। कलकत्ता में काली घाट में भी गंगा को ले आये हैं। ब्रह्मपुत्रासे ही और नदी निकलती है ना। प्रजापिता ब्रह्मा को ब्रह्मपुत्री कहेंगे। यह राज़ कोई शास्त्रों आद में नहीं हैं। बात कितनी सहज है। परन्तु किसकी भी बुधि में आता नहीं हैं। ज्ञान से ही सदगति होती हैसेकण्ड में। फिर कहते हैं ज्ञान इतना अथाह हैसारा समुद्र की स्याही बनाओ तो भी अन्त नहीं हो सकता। बाप भिन्न2 पायन्टस तो रोज समझाते हैं। बाप कहते हैं आज तुमको बहुत गुह्य बातें सुनाता हूं। बच्चे कहते हैं पहले क्यों नहींसुनाया। अरे पहले सभीकेसेसुनावेंगे। कहानीतो शुरु से लेकर नम्बरवार सुनावेंगे ना। पिछाड़ी का पार्ट पहले कैसे सुना देंगे। यह भी बापसुनाते रहते हैं। यहसृष्टि चक्र के आदि मध्य अन्त का राज़ तुम जानते हो। तुम से कोई पूछे तो तुम झट रेसपाण्ड कर सकते हो। तुम्हारे में भी नम्बरवार हैं। जिनकी बुधि में बैठा हुआ है। तुम्हारे पास आते हैं पूरा रेसपाण्ड न मिलता है तो बाहर जाकर कहते हैं यहां तो पूरी समझानी नहीं मिलती है। फालतू चित्र रख देते हैं। इसलिए इन्हों को समझाने वाला बड़ी चाहिए। नहीं तो वह भी पूरे समझने वाले नहीं, समझाने वाली भीपूरी नहीं तो "जैसे को तैसा मिला सुन ले राजा भील,"....कहावत है ना। बाप कहते हैंकहां2 हम देखते हैं आदमी बड़ा अच्छा समझदार है बच्चे इतने शुद्ध नहीं है तो फिर हम ही उन में प्रवेश करमदद कर लेते हैं। क्योंकि बाम है बहुत छोटा राकेट। आने-जाने में देरी नहीं लगती है। उन्हों ने फिर बहुरूपी वा सर्वव्यापी की पायन्ट उठा ली है। यह तो बाप तुम बच्चों को बैठ समझाते हैं। कोई2 आदमी अच्छे होते हैं तो उनको समझाने वाला भी ऐसा चाहिए। आज कल तो कोई छोटेपन सेभी शास्त्र आद कं० कर लेते हैं। क्योंकि आत्मा संस्कार आती है। कहां भी जन्म ले फिर वेद-शास्त्र आद पढ़ने लग पड़ेंगी। अन्त मते सो गति होता है ना। आत्मा संस्कार ले जाती है ना। अभी तुम बच्चे समझदार हो आखिर वह दिन आया आज। जो स्वर्ग के द्वार सच्च2 खुलते हैं। नई दुनिया की स्थापना पुरानी दुनिया का विनाश होना है। मनुष्यों को तो यह भी पता नहीं है कि स्वर्ग नई दुनिया को कहा जाता है। तुम बच्चे जानते हो। हम सच्ची2 सत्यना0 की कथा वा अमरनाथ की कथा सुन रहे हैं। है एक ही कथा। सुनाई भी एक ने है। दृष्टान्त है सभी तुम्हारे जैसे फिर भक्ति मार्ग में उन्हों ने उठा ली है। तो संगम पर बाप ही आकर सभी बातें समझाते हैं। यह बड़ा भारी बेहद का खेल है। इसमें पहले2 है सतयुग-त्रेता राम-राज्य। फिर होता है रावण राज्य। यह ड्रामा बना हुआ है। इनको अनादी अविनाशी कहा जाता है। हम सभी आत्मायें हैं। यह ज्ञान कोई को है नहीं। जो तुमको बाप ने ज्ञान दिया है। जो भी आत्मायें हैं उनका पार्ट ड्रामा में नूंधा हुआ है। जिस समय जिसका जो पार्ट होगा तब आवेंगे। बुधि को पाते रहेंगे। बच्चों के लिए मुख्य बात है पतित से पावन बनना। बुलाते भी हैं हे पतित पावन आओ। घड़ी2 बुलाते रहते हैं। बच्चे ही बुलाते हैं। बाप भी कहते हैं हमारे बच्चे काम चिक्षा पर बैठभस्म हो गये हैं। यह है यर्थात बातें। यह भी समझते हो आत्मा जो अकाल है उनका यह तख्त है। लोन लिया हुआ है। ब्रह्मा के लिए भी तुम से पूछते हैंयह कौन है। बोलो देखो लिखा हुआ हैभगवानुवाच मैंसाधारण तन में आता हूं। वह सिंझाहुआ(सजाया हुआ) श्री कृष्ण ही84 जन्म ले साधारण बनता है। साधारण फिर वह बनता है। नीचे तपस्या कर रहे हैं। जानते हैं हम यह बनने वाले हैं। त्रिमूर्ति तोबहुतों नेदेखाहै परन्तु उनका अर्थ भी चाहिए ना। स्थापना जो करते हैं फिर पालना भी वही करते हैं स्थापना

के समय का नामरूप देशकाल अलग, पालनाका नाम रूप देशकाल अलग है बिल्कुल। यह बात समझाने में तो बहुत सहज है। यह नीचे तपस्या कर रहे हैं यह बनने वाले हैं। यही 84 जन्म ले यह बनते हैं। कितना सहज ज्ञान है सेकण्ड का। बुधि में यह ज्ञान है हम यह देवता बनते हैं। 84 जन्म भी इन देवताओं को ही लेनी है। और कोई लेते हैं क्या। नहीं। 84 जन्म का राज़ भी बच्चों को समझा दिया है। देवतायें ही हैं जो पहले आते हैं। खिलौना होता है ना मच्छलियों का। मच्छली ऐसे नीचे जाती है फिर ऊपर चढ़ती है। वह भी जैसे सीढ़ी है। भ्रमरी कच्छुओं आद का मिशाल भी दिये जाते हैं वह सभी हैं इस समय के। भ्रमरी में भी देखो अकल कितना है। मनुष्य अपने को बहुत ही अकलमन्दसमझते हैं। परंतु बाप कहते हैं भ्रमरी जितना भी अकल मनुष्यों को नहीं है। सर्प पुरानी खल बदल नई ले लेते हैं उनमें भी कितना अकल है। यह बहुत अच्छी दृष्टान्त है। जो बाप ने दिये हैं। फिर बाद में सन्यासियों ने ले ली है। बच्चों को कितना समझदार बनाया जाता है। समझदार और लायक। आत्मा-पवित्र होने कारण लायक बनती है। अपवित्र होने से नालायक बनती है। तो उनको पवित्र बनाकर लायक बनाना है। वह है ही लायकों की दुनिया। लायक को देवता कहा जाता है। यह तो एक बाप का ही काम है जो सारी सृष्टि को हेल से हैविन बना बनाते हैं। हैविन क्या होता है यह मनुष्यों को पता नहीं। हैविन कहा जाता है देवी-देवताओं की राजधानी को। सतयुग में ही देवी-देवताओं का राज्य होता है। अभी तुम समझते हो सतयुग नई दुनिया में हम ही राज-भाग करते हैं। 84 जन्म भी जरूर हमने लिया है। हम ही सतोप्रधान थे फिर तमोप्रधान बने हैं फिर बाप सतोप्रधान बनाते हैं। कितना बारी राज्य लिया है फिर गवांया है। यह भी तुम जानते हो, राम मत से तुम ने राज्य लिया है। रावण मत से राज्य गंवाया है। अभी फिर ऊपर चढ़ने लिए तुमको राम मत मिलती है। गिरने लिए नहीं मिलती है। समझाते तो बहुत अच्छी तरह से हैं परन्तु भक्ति-मार्ग की बुधि चेंज बड़ी मुश्किल होती है। भक्ति मार्ग का शो बहुत है। वह है दुबण। एकदम गले तक उस दूबण में डूब पड़ते हैं। भक्ति को दूबण कहा जाता है। सारी सृष्टि के मनुष्य मात्र दुबण में फंसे हुये हैं। बाप कहते हैं जब सभी की अन्त होती है तब फिर मैं आता हूं। मैं आकर इन बच्चों द्वारा ही कार्य कराता हूं। बाबा के साथ सर्विस करने वाले ब्राहमण ही हो। जिनको खुदाई खिज़मतगार कहा जाता है। यह भी सब से अच्छी खिज़मत है। श्रीमत बच्चों को मिलती है किऐसे2 करो। फिर उन से छांट कर निकलेंगे। यह भी नई बात नहीं। कल्प पहले भी जितने देवी देवतायें निकले थे वही फिर निकलेंगे। ड्रामा में नूंध है। तुमको सिर्फ पैगाम पहुंचाना है। है बहुत सहज। इसलिए बाबा ने गीत भी बनाई थी। वह लोग कितना खर्चा करते हैं। एक मैगजीन है जिसमें खास श्रीकृष्ण के हिंसक चित्र दिखाई है। कृष्ण को ही जैसे कि हिंसक बना दिया है। स्वदर्शनचक्र से सभी का गला काटम। इनको मारा। अभी स्वदर्शनचक्र धारी तो कृष्ण है नहीं। इनका अर्थ भी तुम ने समझा है। स्व को दर्शन होता है चक्र का। बाकी गले आद काटने आद की कोई बात नहीं। आसुरी सम्प्रदाय है ना। तुम भी थे। बाकी श्रीकृष्ण कोई चक्र थोड़े ही फिराता है। जिससे आसुरी दुनिया खलास हो जाती है। यह सभी है दन्तकथायें। भक्ति मार्ग है ना। भगवान आते ही हैं कल्प के संगम पर। जब कि भक्ति भी फुल फोर्स में है। बाप आकर सभी को ले जाते हैं तुम पर अभी अविनाशी वृक्षपत की दया है। सिर्फ सभी स्वर्ग में जाते हैं। फिर पढ़ाई में नम्बरवार होते हैं। कोई पर मंगल की दशा, कोई पर राहू की दशा बैठती है। अच्छा बच्चों को गुडमार्निंग और नमस्ते।

डायरेक्शनः- आगरा में गांधी नगर वाला जो सेन्टर था वह मकान अभी छोड़ दिया गया है। वह सेन्टर विजय नगर म्युज़ियम में सिफ्ट किया गया है। जिसकी एड्रेस यह है :-

****

BRAHMA KUMARIS
207/2 North Vijay Nagar
Ring Road
AGRA -4